राधे की कुण्डलियाँ

राधा तिवारी 'राधेगोपाल'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

राधे की कुण्डलियाँ

(कलम की सुगंध छंदशाला)

राधा तिवारी "राधेगोपाल"

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-223-4

संपादक- अनिता मंदिलवार "सपना"

आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- डॉ. प्रीति समकित सुराना, 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,

जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

मोबाईल- 9424765259, 9009465259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण- 2020, राधा तिवारी "राधेगोपाल"

मूल्य- 90.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY RADHA TIWAREE 'RADHE GOPAL'

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

राधा की लेखनी करे, कितने यहाँ सवाल।
कहती सपना है यही, आप रहो खुशहाल।।

कलम की सुगंध छंदशाला के द्वारा समय समय पर छंद विधाओं पर शतकवीर आयोजन होता रहता है। इसके पहले दोहा, रोला, चौपाई, कुण्डलियाँ शतकवीर का सफल आयोजन हो चुका है। आगे भी कई विधाओं पर शतकवीर का आयोजन करने का विचार प्रस्तावित है। ये सभी आयोजन पटल के संस्थापक आदरणीय गुरू संजय कौशिक विज्ञात जी के निर्देशन में संपन्न होते रहें है।

इस बार शतकवीर आयोजन में शामिल रचनाकारों की सौ कुण्डलियों को पुस्तक रूप देने की योजना आदरणीय संजय कौशिक विज्ञात जी के निर्देशानुसार कलम की सुगंध ने अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन के सौजन्य से प्रकाशित करने की योजना बनाई। आदरणीया प्रीति सुराना जी ने सहर्ष स्वीकार किया। हम उनके बहुत आभारी हैं।

इसी क्रम में आदरणीया राधा तिवारी "राधे गोपाल" जी का एकल संग्रह "राधे की कुण्डलियाँ" प्रकाशन में है। सर्वप्रथम आदरणीया "राधे गोपाल" जी को हार्दिक शुभकामनाएँ और बधाइयाँ। आदरणीया राधा जी की साहित्य साधना अनवरत जारी है। कुण्डलियाँ जैसे कठिन छंद विधा पर सतत कलम चलना आपकी साहित्यिक सृजनात्मकता का परिचायक है।

माँ शारदे की कृपा से आपकी लेखनी नई यात्रा तय कर अपनी निर्धारित मंजिल को अवश्य प्राप्त करेगी।

अ मंदिलवार

मुख्य संचालिका
अनिता मंदिलवार सपना
कलम की सुगंध छंदशाला

शुभकामना सन्देश

प्रिय राधा तिवारी "राधे गोपाल" जी,

कलम की सुगंध पर आपकी सशक्त कलम अनेक छंद विधाओं पर निरन्तर नियमित सृजन करती आ रही है। कुण्डलियाँ का शतक सृजन करने जैसी विशेष उपलब्धि और उसके पश्चात आपका यह एकल संग्रह आपकी छंद विधा पर समझ और सतत श्रम का परिचायक है। यह संग्रह 'राधे की कुण्डलियाँ' विभिन्न विषयों को समेटे हुए एक अनुपम और अनोखा संग्रह है। पाठक वर्ग इसे पढ़ते हुए अनेक रसों का स्वाद चखकर निश्चय ही आनंद प्राप्त करेगा। यह उपलब्धि आपको भी जीवन भर आनंद की अनुभूति देती रहेगी। और इस प्रकार से आप सैकड़ों संग्रह प्रकाशित करवाकर शुद्ध साहित्यकार के रूप में विशेष स्थान प्राप्त करें। इन्हीं शब्दों के साथ आपको ढेरों बधाई एवं मंगलकामनाएं....!

संजय कौशिक 'विज्ञात'
संस्थापक
कलम की सुगंध

शुभकामना सन्देश

यह बड़े हर्ष का विषय है की श्रीमती राधा तिवारी "राधेगोपाल" का एक और संग्रह "राधे कि कुण्डलियाँ " प्रकाशित हो रहा है इसके लिए मैं कवयित्री और मेरी अर्धांगिनी श्रीमती राधा तिवारी “राधेगोपाल “ को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ और इनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ

गोपाल दत्त तिवारी, खटीमा

समीक्षा

कवयित्री राधा तिवारी जी उत्तराखंड से हैं और शिक्षा विभाग में अंग्रेजी की अध्यापिका के रूप में कार्यरत हैं।

प्रस्तुत कुंडलियाँ संग्रह में आपने जीवन के विभिन्न पहलुओं पर कुंडलियाँ लिखी हैं।

महिलाओं को आप विशेष महत्व देती हैं और अपनी कुंडलियों में श्रृंगारिकता का वर्णन बड़े ही सुन्दर ढंग से करती हैं।

आपने शबरी के बेरों को याद किया है तो गीता पर भी आपने सुंदर कुंडलिया लिखी है।दुख-सुख पर भी आपने कुंडलियों का सुंदर सृजन किया है।

यही नहीं मेलों में धमाल करते बच्चों का भी चित्रण किया है। नैतिकता का पाठ पढ़ाती विभिन्न कुण्डलियों के तो कहने ही क्या। अंत में आप कहती हैं कि सपना जो हमने देखा है वह सपना पूरा हो जाए तो हमेशा आपके सपने पूरे होते रहें और दिन-रात सदा आपकी लेखनी चलती रहे ,यही कामना है।

आदरणीया राधा तिवारी जी ,मैं डॉ सरला सिंह 'स्निग्धा' ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि आपके हर सपने जीवन में पूरे हो।आपकी और भी बहुत सारी पुस्तकें प्रकाशित होती रहें।आप सदा स्वस्थ और प्रसन्न रहें तथा दीर्घायु हों।

डॉ सरला सिंह "स्निग्धा"
हिन्दी अध्यापिका
शिक्षा विभाग

कवयित्री की कलम से

मेरे लिए यह बड़े हर्ष का विषय है की आज अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन के माध्यम से मेरा प्रथम छंद बद्ध संग्रह जिसमें 100 कुण्डलियाँ सम्मिलित की गई हैं प्रकाशित हो रहा है “राधे कि कुण्डलियाँ” 50 दिन के सतत परिश्रम से बनी हुई है इस लघु पुस्तिका का महत्व मेरे लिए और भी अधिक महत्वपूर्ण है।

एक दिन अचानक मुझे एक ऐसा व्हात्सप्प समूह मिला जो कुण्डलियाँ सिखाता था। कुण्डलियाँ मेरे लिए एक नई विधा थी जिसे सही तरीके से समझने के लिए मैं उस ग्रुप में जुड़ गई,वहाँ आदरणीय संजय कौशिक 'विज्ञात' जी ने कुण्डलियाँ लिखने का सही तरीका मापनी समूह में रखी।शुरू में कुछ परेशानी भी हुई। सीखने में, समझने में समय लगता है लेकिन हमारे समूह के समीक्षक लोग विशेष रुप से आ बाबूलाल शर्मा बोहरा जी, आ कृष्ण मोहन निगम जी जो बहुत अच्छे तरीके से हमारी कुंडलियों की समीक्षा करते थे और प्रोत्साहित भी करते थे।सभी लेखकों को प्रोत्साहित करने में कोई कसर नहीं छोड़ते थे। बीच-बीच में आदरणीया अनिता मंदिलवार जी सम्मान पत्र देकर अच्छे लेखकों को सम्मानित करती थी तो इस तरह से यह समूह आगे बढ़ता गया।हमें कुण्डलियाँ शतक वीर बनाने के लिए प्रत्येक दिन दो-दो विषय दिए जाते थे और हम उस पर अपने कुण्डलियाँ लिखते थे।इस प्रकार हमारी कुंडलियाँ शतकवीर हो गई।

आज मेरी यह पुस्तक आपके सामने है मैं धन्यवाद दुँगी हमारे समूह के प्रत्येक सदस्यों का जिन्होंने जाने अनजाने हमारी कुंडलियों की समीक्षा की।आशीष देती हूँ मैं अपने बच्चों स्वाति युगल को जिन्होंने मेरी इस पुस्तक को त्रुटिरहित करने में मेरी मदद की।राधे की कुण्डलियाँ पुस्तक की समीक्षा लिखने के लिए में डॉ सरला सिंह "स्निग्धा"का विशेष रूप से आभार प्रकट करती हूँ।

राधा तिवारी "राधेगोपाल"

समर्पण

मैं अपनी

“राधे कि कुण्डलियाँ”

पुस्तक अपने प्यारे बच्चों

स्वाति और युगल

को समर्पित करती हूँ

और इनके उजवल भविष्य कि कामना करती हूँ!

(1)

वेणी

वेणी प्यारी सी बने, यदि हो लंबे बाल।
नागिन जैसी लग रही, गोरी की तो चाल।।
गोरी की तो चाल, लगे हैं सबको प्यारी।
रानी बनकर राज, करे हर घर में नारी।।
कह राधेगोपाल, प्रथम नारी की श्रेणी।
नारी की है शान, बनी बालों की वेणी।।

(2)

कुमकुम

कुमकुम भर के माँग में, नार करे श्रृंगार।
फेरे लेकर सात वो, आती पिय के द्वार।।
आती पिय के द्वार, विदाई करती माता।
वर जी आए द्वार, बदलता भाई छाता।।
कह राधेगोपाल, पिता जी क्यों है गुमसुम।
नारी का श्रृंगार, सदा से ही है कुमकुम।।

(3)

काजल

काजल आँखों पर लगा, नैन रही मटकाय।
देख सजन को सामने, गोरी भी इठलाय।।
गोरी भी इठलाय, झुका वो नैना बोले।
मुस्काती वो आय, सजन सम्मुख वो डोले।।
कह राधेगोपाल, सजन को देखे हरपल।
नैन रही मटकाय, लगाकर वो तो काजल।।

(4)

गजरा

लेके गजरा हाथ में, साजन जी मुस्काय।
सजनी जी के बाल पे, पिन से वो अटकाय।।
पिन से वो अटकाय, करे वो बातें मन की।
सोनी सी हो नार, अरे मेरे जीवन की।।
कह राधेगोपाल, लुभाओ कजरा देके।
जाओ साजन धाम, सदा तुम गजरा लेके।।

(5)

पायल

पायल के घुँघरू कहे, चल साजन के पास।
साजन तो अच्छे लगे, हर दिन बारह मास।।
हर दिन बारह मास, करेंगे हम तो छन छन।
चूड़ी सबके हाथ, बजेगी खन खन खन खन।।
कह राधेगोपाल, सजन को कर दूँ कायल।
जाऊँ उनके पास, पहन के मैं तो पायल।।

(6)

कंगन

कंगन सोने के बने, चाँदी की पाजेब।
पहनो गोरी ये सभी, जाओ पिय के देश।।
जाओ पिय के देश, बसाओ अपने घर को।
जा बेटी ससुराल, वरण करलो तुम वरको।।
कह राधेगोपाल, बिखेरे खुशबू चंदन।
लाओ तुम गलहार, सजन हाथों के कंगन।।

(7)

बिंदी

बिंदी से शोभा बढे, नारी की भरपूर।
नथनी कहती झूम के, मत जाओ तुम दूर।।
मत जाओ तुम दूर, सजन से कहती सजनी।
रहना हरदम पास, दिवस हो चाहे रजनी।।
कह राधेगोपाल, पहाड़ी हो या सिंधी।
चमक रही है भाल, सभी नारी के बिंदी।।

(8)

डोली

डोली में वो बैठके, जाती जब ससुराल।
सोचो बेटी के बिना, मात-पिता का हाल।।
मात-पिता का हाल, जगत के लोगों जानो।
भेज रहे परदेस, कलेजा अपना मानो।।
कह राधेगोपाल, चमकती चुनर चोली।
जाती है ससुराल, सुता चढ़ करके डोली।।

(9)

आँचल

आँचल फैला कर गई, नारी माँ के द्वार।
माता से है माँगती, वो जीवन आधार।।
वो जीवन आधार, खिले आँगन फुलवारी।
साजन जी के साथ, बसी है दुनिया सारी।।
कह राधेगोपाल, चलें हम साथ हिमाचल।
माता जी के द्वार, गई फैलाकर आँचल।।

(10)

कजरा

कजरा नैनों से कहे, सुन लो मेरी बात।
दो नैनों की है मिली, मुझको भी सौगात।।
मुझको भी सौगात, कहे सब मुझको काला।
देती मेरा साथ, सदा ही बिंदी माला।।
कह राधेगोपाल, लगा चोटी में गजरा।
सुन लो मेरी बात, कहे नैनों से कजरा।।

(11)

चूड़ी

चूड़ी खनकी हाथ में, पायल छनके पाँव।
इठलाती अब आ रही, सजनी अपने गाँव।।
सजनी अपने गाँव, मिलेगी सखियाँ सारी।
हरियाली चहुँ ओर, यहाँ पर है मनुहारी।।
कह राधेगोपाल, सभी खाते हैं पूड़ी।
नारी के तो हाथ, सजी है हरदम चूड़ी।।

(12)

झुमका

झुमका लेकर आ गए, मेरे तो गोपाल।
देते हैं उपहार वो, मुझको तो हर साल।।
मुझको तो हर साल, कभी वो देते साड़ी।
करती हूँ मनुहार, दिलादो हमको गाड़ी।।
कह राधेगोपाल, लगाऊँ मैं तो ठुमका।
पहनूँ नथनी, हार, सजे कानों में झुमका।।

(13)

जीवन

जीवन जीने की कला, होगी जिसकी खास।
अपने जीवन में सदा, होगा वो ही पास।।
होगा वो ही पास, समय को यूँ मत खोना।
रखना हरदम धीर, अधीर कभी मत होना।।
कह राधेगोपाल, बना तू जीव सँजीवन।
समय बड़ा अनमोल, बिताओ सुख से जीवन।।

(14)

उपवन

उपवन में मेरे खिले, रंग-बिरंगे फूल।
मैं तो उनकी राह से, सदा हटाती शूल।।
सदा हटाती शूल, वही मेरी फुलवारी।
उनसे ही तो मिले, जगत की खुशियाँ सारी।।
कह राधेगोपाल, युगल स्वाती से मधुवन।
खुशियों से भर जाय, सदा सबका ही उपवन।।

(15)

कविता

कविता गज़लें गीत सब, राधे की पहचान।
रात दिवस लिखती रहूँ, है मेरा अरमान।।
है मेरा अरमान, पढे ये दुनिया सारी।
साथ रहे परिवार, निभाऊँ दुनियादारी।।
कह राधेगोपाल, बहे भावों की सरिता।
लिखती जाऊँ रोज, नियम से मैं तो कविता।।

(16)

ममता

ममता जब माँ की मिले, भगवन रहते पास।
माँ तो बच्चों के लिए, रख लेती उपवास।।
रख लेती उपवास, हरे वो संकट सारे।
माँ को लगते लाल, सदा आँखों के तारे।।
कह राधेगोपाल, अधिक है माँ की क्षमता।
हो जाते हैं पार, मिले जब माँ की ममता।।

(17)

बाबुल

बाबुल का घर छोड़के, जाती पिय के द्वार।
मात-पिता से बेटियाँ, करती हरदम प्यार।।
करती हरदम प्यार, रहे बन राजकुमारी।
देती सबको मान, पिता को लगती प्यारी।।
कह राधेगोपाल, चलो काशी या काबुल।
बेटी को तो प्यार, करे हरदम ही बाबुल।।

(18)

भैया

भैया रेशम डोर की, रखना हरदम लाज।
बनकर के रहना सदा, बहना का सरताज।।
बहना का सरताज, सभी संकट को हरना।
आँखों में हो नूर, कभी आँसू मत भरना।।
कह राधेगोपाल, चली है सबकी नैया।
बहनों का तो साथ, सदा देते है भैया।।

(19)

बहना

बहना भाई साथ में, खेल रहे हैं खेल।
बिगड़े कोई बात पे, करते हैं फिर मेल।।
करते हैं फिर मेल, कभी हँसते गाते हैं।
जाना हो जब दूर, सदा ही सँग जाते हैं।।
कह राधेगोपाल, सदा मिलकर के रहना।
खेलो सबके साथ, सदा तुम भाई बहना।।

(20)

सखियाँ

सखियाँ सारी खेलती, हैं राधा के साथ।
पनघट पर सब जा रहीं, पकड़ पकड़ के हाथ।।
पकड़ पकड़ के हाथ, करें सब जोरा जोरी।
हँसकर करतीं बात, सुने सब राधा गोरी।।
कह राधेगोपाल, मटकती कैसे अखियाँ।
राधा के तो साथ, हमेशा खेले सखियाँ।।

(21)

कुनबा

कुनबा मिटता दिख रहा, जब टूटी थी शाख।
सभी पत्तियाँ झड़ गईं, जलकर देखो राख।।
जलकर देखो राख, कहें अब पंछी सारे।
दुख का है आगाज, दिख रहे हमको तारे।।
कह राधेगोपाल, मिला है यही तजुर्बा।
जब टूटी थी शाख, मिटा दिखता है कुनबा।।

(22)

पीहर

पीहर जब भी छूटता, रोते हैं दो नैन।
मातु-पिता की लाडली, होती क्यों बेचैन।।
होती क्यों बेचैन, कहें अब सखियाँ सारी।
जाएगी ससुराल, हमारी बिटिया प्यारी।।
कह राधेगोपाल, अरे तू यूँ मत सीहर।
रोते हैं दो नैन, सदा जब छूटे पीहर।।

(23)

पनघट

पनघट पर गोरी गई, लेकर मटकी हाथ।
जल भरने को जा रही, वो सखियों के साथ।।
वो सखियों के साथ, हमेशा जाती रहती।
सूख गए हैं ताल, कमी अब जल की कहती।।
कह राधेगोपाल, गगरिया बनकर नटखट।
छनकाती है नीर, गई जब सखियाँ पनघट।।

(24)

सैनिक

सैनिक मेरे देश के, नमन करूँ शत बार।
अरि पे करते तुम सदा, चौकस हो कर वार।।
चौकस हो कर वार, सदा सीमा पर रहते।
मात-पिता परिवार, यही हैं सबसे कहते।।
कह राधेगोपाल, धरें ये धीरज दैनिक।
नमन करूँ शत बार, अरे ओ तुमको सैनिक।।

(25)

कोयल

काली कोयल है दिखी, आँखें उसकी लाल।
कुहुक कुहुक कर बोलती, बैठी जब भी डाल।।
बैठी जब भी डाल, फुदकती वो है रहती।।
गाती रहती गीत, सरस बन करके बहती।
कह राधेगोपाल, अरे वो बड़ी निराली।।
आँखें उसकी लाल, दिख रही कोयल काली।।

(26)

अंबर

अंबर सर पे ताज है, नदियाँ धोती पैर।
सागर की लहरें कहें, सदा किनारे तैर।।
सदा किनारे तैर, लहर उठती है भारी।
उथल-पुथल चहुँ ओर, दिखे कितने नर नारी।।
कह राधेगोपाल, नहीं करना आडंबर।
सर पे सबके ताज, बना बैठा है अंबर।।

(27)

अविरल

अविरल गंगा बह रही, ले देवी का रूप।
मत इसको गंदा करो, माँ के हैं अनुरूप।।
माँ के अनुरूप, करो सब इसका आदर।
कूड़ा इसमें डाल, करो मत गंदा सादर।।
कह राधेगोपाल, मनुज सब पूजे पल-पल।
देवी का है रूप, बह रही गंगा अविरल।।

(28)

सागर

सागर की लहरें सदा, करती रहती शोर।
पर मन को चुभती नहीं, करती सदा विभोर।।
करती सदा विभोर, लहर है आती-जाती।
बैठ किनारे देख, सदा ये मन को भाती।।
कह राधेगोपाल, क्षणों में भरदे गागर।
चलो किनारे आज, अरे हम देखें सागर।।

(29)

अनुपम

अनुपम नटखट राधिका, सुंदर राधे श्याम।
मंदिर दर मंदिर बने, चलता रहता काम।।
चलता रहता काम, शीत हो या हो गरमी।
कहते हैं जो बात, रखें वो उसमें नरमी।।
कह राधेगोपाल, साँवरा बनता हमदम।
सुंदर राधेश्याम, राधिका नटखट अनुपम।।

(30)

धड़कन

धड़कन गिनकर है मिली, मत करना बेकार।
जीवन के दिन चार हैं, कर लो सब से प्यार।।
कर लो सब से प्यार, सभी को अपना मानो।
रिश्ते नाते छोड़, सभी को अपना जानो।।
कह राधेगोपाल, बिखरते झूठे बंधन।
मत करना बेकार, मिली है गिनकर धड़कन।।

(31)

वीणाधारी

वीणाधारी मातु है, विद्या का आधार।
माँ से राधे कर रही, हाथ जोड़ मनुहार।।
हाथ जोड़ मनुहार, खुशी सब पर बरसाना।
भरो सभी में मातु, सदा तुम ज्ञान खजाना।।
कह राधेगोपाल, मधुर है तान तुम्हारी।
राधा आई द्वार, दरश दो वीणाधारी।।

(32)

नैतिक

नैतिक शिक्षा दीजिए, निज संतति को आप।
मिट जाए इस देश से, कुत्सित मन अभिशाप।।
कुत्सित-मन अभिशाप, नीति पथ अवरोधित है।
भले कठिन है राह, राह यह संशोधित है।।
कह राधेगोपाल, बात है यह भी वैदिक।
कभी न छोड़ो सत्य, सत्य है शाश्वत नैतिक।।

(33)

विजयी

विजयी होने के लिए, करना मत आराम।
सीख सिखाती हार तो, समझो मत नाकाम।।
समझो मत नाकाम, यही सीढ़ी चढ़ने की।
हार दिखाती राह, सदा आगे बढ़ने की।।
कह राधेगोपाल, बनो मत बच्चों विषयी।
करके मेहनत आप, रहो तो हरदम विजयी।।

(34)

भारत

भारत मेरा देश है, सब देशों की शान।
इसने पूरे हैं किए, सबके ही अरमान।।
सबके ही अरमान, दिखी वीरों की जोड़ी।
नारी ने भी राह, यहाँ खुद अपनी मोड़ी।।
कह राधेगोपाल, यहीं से हुआ सवेरा।
सब देशों की शान, बन रहा भारत मेरा।।

(35)

छाया

छाया जब माँ की मिले, होते सारे काम।
माँ की ममता को कभी, करना मत बदनाम।।
करना मत बदनाम, वही तो जग में लाई।
सहकर पीड़ा आप, तुझे जीवन दे पाई।।
कह राधेगोपाल, तुझे है माँ ने जाया।
होते सारे काम, मिले जब माँ की छाया।।

(36)

निर्मल

निर्मल पावन है यहाँ, गंगा जी का नीर।
करके पूजा जाप को, बदलें सब तकदीर।।
बदलें सब तकदीर, डाल मत कूड़ा करकट।
हरती सबकी पीर, सफाई कर दे झटपट।।
कह राधेगोपाल, अरे आ निर्धन निर्बल।
गंगा जी का नीर, सदा है पावन निर्मल।।

(37)

विनती

विनती है मेरी यही, सुन लो दीनानाथ।
पग पग पर मेरे रहे, सदा आप ही साथ।।
सदा आप ही साथ, करो सब की रखवाली।
बन के रहना आप, सदा बगिया का माली।।
कह राधेगोपाल, दया की करती गिनती।
सुन लो दीनानाथ, यही है सब की विनती।।

(38)

भावुक

भावुक हो जाते सभी, देख दीन लाचार।
देकर उनको दान को, करना शुभ व्यवहार।।
करना शुभ व्यवहार, दिखा दो तुम मानवता।
वह भी अपने मीत, करो मत तुम दानवता।।
कह राधेगोपाल, न हो हाथों में चाबुक।
देख दीन लाचार, सभी हो जाते भावुक।।

(39)

धरती

धरती को भी जानिए, सदा मातु का रूप।
कथनी करनी भी सदा, होती है अनुरूप।।
होती है अनुरूप, सहन करती है पीड़ा।
उगती फसलें देख, लिया है जग का बीड़ा।।
कह राधेगोपाल, सभी का पेट है भरती।
माता का है रूप, सदा से अपनी धरती।।

(40)

मानव

मानव के दिल में सदा, रहते हैं भगवान।
वो इससे अनजान है, कैसा है नादान।।
कैसा है नादान, अरे वो बाहर घूमे।
भजनों को तो छोड़, सदा गीतों में झूमे।।
कह राधेगोपाल, बना है वह तो दानव।
रहते हैं भगवान, सदा ही दिल में मानव।।

(41)

गागर

गागर लेकर जा रही, राधा यमुना तीर।
मटक मटक कर के चले, वोभरने को नीर।।
वो भरने को नीर, बीच में कान्हा आए।
राधे को तो देख, सदा ही वो हरषाए।।
कह राधेगोपाल, कन्हैया नटवर नागर।
राधा यमुना तीर, जा रही ले कर गागर।।

(42)

सरिता

सरिता बढ़ती ही रहे, बिना किए आराम।
ढूँढ रही है वो नए, बहने के आयाम।।
बहने के आयाम, कभी वो बनती नदिया।
लगातार ही बहे, अरे बीती है सदिया।।
कह राधेगोपाल, करें धरती को हरिता।
बिना किए आराम, रहे बढ़ती ही सरिता।।

(43)

गहरा

गहरा सागर देखके, खोना मत तुम धीर।
रहते जो इसके तले, समझो उनकी पीर।।
समझो उनकी पीर, अरे जो तैरे मछली।
लहरों के संग तैर, रही कुछ बाहर उछली।।
कह राधेगोपाल, आसमाँ देता पहरा।
खोना मत तुम धीर, देखकर सागर गहरा।।

(44)

आँगन

आँगन अब छोटे हुए, कहाँ गए सब बाग।
अब तो सुनते हम नहीं, हैं कोयल का राग।।
हैं कोयल का राग, पेड़ अब सब हैं काटे।
सड़कें की तैयार, सभी पर्वत हैं छाटे।।
कह राधेगोपाल, हुए रिश्ते भी खोटे।
कहाँ गए सब बाग, हुए आँगन अब छोटे।।

(45)

आधा

आधा शबरी खा रही, आधा खाते राम।
शबरी के तो बेर भी, लगते मीठे आम।।
लगते मीठे आम, चखे वो पहले खुद ही।
खुश होते हैं राम, नहीं खुद की भी सुध ली।।
कह राधेगोपाल, मिट गई सारी बाधा।
आधा खाते राम, रही चख शबरी आधा।।

(46)

यात्रा

यात्रा पर निकलो कभी, रखना इतना ध्यान।
टिकट रखो तुम जेब में, आए न व्यवधान।।
आए न व्यवधान, करो तुम यात्रा पूरी।
जाना मिल परिवार, यही है बहुत जरूरी।।
कह राधेगोपाल, घटेगी दुख की मात्रा।
इतना रखना ध्यान, करोगे जब भी यात्रा।।

(47)

कोना

कोना मेरे धाम का, रखता मेरा मान।
कहता है मुझको सदा, यहाँ रखो सम्मान।।
यहाँ रखो सम्मान, यही है मेरी चाहत।
इन सब को तो देख, मुझे मिलती है राहत।।
कह राधेगोपाल, अरे तुम कभी न रोना।
रखता मेरा मान, हमेशा घर का कोना।।

(48)

मेला

मेला लगता देखकर, बच्चे करे धमाल।
चाट पकौड़ी खा रहे, सब होते खुशहाल।।
सब होते खुशहाल, अरे वो देखे झूला।
जोकर छोटा बाल, उदर भी उसका फूला।।
कह राधेगोपाल, दिखा दुनिया का रेला।
बच्चे करे धमाल, लगा है देखो मेला।।

(49)

धागा

धागा हरदम प्रेम का, रखना अपने पास।
जो दुख में भी साथ दे, वो होता है खास।।
वो होता है खास, कभी मत उसको छोड़ो।
जीवन के दिन चार, प्रीत तुम सब से जोड़ो।।
कह राधेगोपाल, बनो मत काला कागा।
रहना सबके साथ, सदा बनकर के धागा।।

(50)

बिखरी

बिखरी यादें कर रही, है साजन को याद।
कहाँ नहीं तुम हो प्रिये, करती है फरियाद।।
करती है फरियाद, पिया हम भूल न पाते।
आती है जब याद, हमें तुम बहुत सताते।।
कह राधेगोपाल, तुम्हारे प्यार से निखरी।
करती तुमको याद, सदा ही यादें बिखरी।।

(51)

गलती

गलती करने से नहीं, होते हैं बदनाम।
गलती जो करते नहीं, उनके रूकते काम।।
उनके रुकते काम, कमी को हरदम बोलो।
करने सच्ची बात, अरे तुम मुँह तो खोलो।।
कह राधेगोपाल, कमी तो सबको खलती।
सीखोगे हर काम, करोगे जब भी गलती।।

(52)

बदला

बदला लेने को कभी, मन में मत रख आस।
इस जग में सबसे बड़ा, होता है विश्वास।।
होता है विश्वास, नहीं तुम इसको तोड़ो।
रिश्ते नातें सदा, अरे तुम जग में जोड़ो।।
कह राधेगोपाल, यही तो सबको बतला।
जो करता हर काम, सदा ही वो है बदला।।

(53)

दुनिया

दुनिया में रहना सदा, मात-पिता के साथ।
पार सड़क करते समय, पकड़ो उनका हाथ।।
पकड़ो उनका हाथ, वही है भगवन तेरे।
कष्ट सहे दिन-रात, कभी भी मुँह ना फेरे।।
कह राधेगोपाल, संग हो मेरे मुनिया।
मात-पिता के साथ, बनी बच्चों की दुनिया।।

(54)

तपती

तपती है जब रेत भी, जेठ मास में रोज।
देखो लोगों का उड़ा, कैसे निशदिन ओज।।
कैसे निशदिन ओज, रंग भी होता काला।
श्वेद टपकता देख, रखो तुम पास दुशाला।।
कह राधेगोपाल, नहीं वह कुछ कर सकती।
जेष्ठ मास में रोज, रेत भी जब है तपती।।

(55)

मेरा

मेरा जग में कुछ नहीं, सब ईश्वर के हाथ।
हे मनमोहन दीजिए, हरदम अपना साथ।।
हरदम अपना साथ, करूँ मैं तेरी पूजा।
इस जग में तो मुझे, नहीं भाया है दूजा।।
कह राधे गोपाल, तुम्हीं को हरदम टेरा।
सनलो मेरी बात, रहे मोहन भी मेरा।।

(56)

सबका

सबका कहना है यही, मोहन है भगवान।
राधा को वो दे रहे, हर पल ही वरदान।।
हर पल ही वरदान, साथ में हँसते गाते।
जा यमुना के तीर, सदा वो रास रचाते।।
कह राधेगोपाल, नाम है दूजा रबका।
मोहन है भगवान, यही है कहना सबका।।

(57)

आगे

आगे चलते राम है, पीछे सीता मात।
तन आभूषण है नहीं, ढके फूल से गात।।
ढके फूल से गात, पहन वो भगवा चलते।
छोड़ महल के ठाठ, घने जंगल में पलते।।
कह राधेगोपाल, अरे लक्ष्मण भी भागे।
पीछे सीता मात, राम जी चलते आगे।।

(58)

मौसम

मौसम अब तो ले रहा, है कितने ही रूप।
कपड़े हरदम ही पहन, मौसम के अनुरूप।।
मौसम के अनुरूप, कभी तो होती गरमी।
होती है बरसात, कभी मौसम में नरमी।।
कह राधेगोपाल, सभी का होता संगम।
रखना अपना ध्यान, बदलता हर पल मौसम।।

(59)

करना

करना मत चोरी कभी, कहना मत तुम झूठ।
अपने प्यारे मीत से, मत जाना तुम रूठ।।
मत जाना तुम रूठ, समझ लो दुनियादारी।
काम बने सब नेक, समझ मत ये लाचारी।।
कह राधेगोपाल, सभी के दुख भी हरना।
श्रम कर ले दिन रात, कभी चोरी मत करना।।

(60)

जाना

जाना आना रीत है, जीवन के दिन चार।
सबसे करलो प्रीत को, जो जीवन आधार।।
जो जीवन आधार, करो तुम महनत पल पल।
छूते हैं जब नीर, तभी करता है हलचल।।
कह राधेगोपाल, सभी कुछ खोना पाना।
जीवन के दिन चार, अरे है सबको जाना।।

(61)

दीपक

दीपक की लौ नित जले, करे तिमिर का नाश।
अँधियारा छँट जाएगा, होगा सदा प्रकाश।।
होगा सदा प्रकाश, करेगा जीवन उज्ज्वल।
मिले सदा आशीष ,चरित भी अनुपम निर्मल।।
कह राधेगोपाल, बाग की शोभा चम्पक।
घर को दे मुस्कान, जले जब जगमग दीपक।।

(62)

पूजा

पूजा करने को चली, नारी शिव के धाम।
कर सोलह सिंगार को, करती अपने काम।।
करती अपने काम, हाथ ले पूजा थाली।
लेती सुंदर फूल, अरे जो लाता माली।।
कह राधेगोपाल, नहीं है शिव सा दूजा।
ले गंगा का नीर, करो तुम शिव की पूजा।।

(63)

थाली

थाली दीपक से सजी, लेकर बैठी द्वार।
सैनिक घर को आ रहा, खुश होती है नार।।
खुश होती है नार, नैन भी उसके डोले।
आया प्रियतम द्वार, सखी से वह तो बोले।।
कह राधेगोपाल, पुष्प ले आई आली।
जगमग है घर बार, सजी दीपक से थाली।।

(64)

बाती

बाती जलती है सदा, कर दीपक से मेल।
साथ इन्हें भी चाहिए, हरदम घी या तेल।।
हरदम घी या तेल, करे ये तब उजियारा।
जलती बाती देख, चमकता घर है सारा।।
कह राधेगोपाल, जली है दिन अरु राती।
दीपक से कर मेल, सदा ही जलती बाती।।

(65)

आशा

आशा अरु विश्वास पे, टिका हुआ संसार।
करना अपने मीत से, सदा कुशल व्यवहार।।
सदा कुशल व्यवहार, कभी भी दिल मत तोड़ो।
करने अच्छे काम, सदा ही खुद को मोड़ो।।
कह राधेगोपाल, करो मत कभी तमाशा।
जीवन हो खुशहाल, ईश से करना आशा।।

(66)

उड़ना

उड़ना सब हैं चाहते, बिना पंख के आज।
सपने में ही कर रहे, हैं सब अपने काज।।
हैं सब अपने काज, कभी धरती मत छोड़ो।
कर लो दिल पर राज, मीत से मुख मत मोड़ो।।
कह राधेगोपाल, नहीं है अच्छा मुड़ना।
बिना पंख के आज, चाहते सब हैं उड़ना।।

(67)

होली

होली में तो खेलते, राधा मोहन संग।
कभी खेलते नीर से, जैसे पी हो भंग।।
जैसे पी हो भंग, मारते हैं पिचकारी।
राधा भीगी हाय, सखी भी भीगी सारी।।
कह राधेगोपाल, नहीं वो अब कुछ बोली।
राधा मोहन संग, अरे जब खेलें होली।।

(68)

खिलना

खिलना देखो फूल का, होता है दमदार।
तितली आकर के करे, कलियों से मनुहार।।
कलियों से मनुहार, रही वो हरदम डोले।
आ जाओ तुम पास, सदा भवँरे से बोले।।
कह राधेगोपाल, वहीं पर होगा मिलना।
होता है दमदार, अरे फूलों का खिलना।।

(69)

साजन

साजन जी जब साथ हैं, राधा है खुशहाल।
पहन पिछौड़ा चल पड़ी, वो अपने ससुराल।।
वो अपने ससुराल, मटक कर वो है चलती।
मात-पिता के साथ, लाडली बन जो पलती।।
कह राधेगोपाल, कहूँ मैं उनको राजन।
राधा है खुशहाल, साथ में जब है साजन।।

(70)

सजना

सजना सजनी से कहें, थामा तेरा हाथ।
जीवन भर मेरा यहाँ, तुम दे देना साथ।।
तुम दे देना साथ, बनी है अपनी जोड़ी।
ज्यादा इसमें प्यार, लड़ाई थोड़ी-थोड़ी।।
कह राधेगोपाल, सुनो पायल का बजना।
थामा तेरा हाथ, कहे सजनी से सजना।।

(71)

बोली

बोली भाषा प्रेम की, समझो ओ नादान।
जीवन जीना भी नहीं, है इतना आसान।।
है इतना आसान, रहो आपस में मिलकर।
जैसे महके फूल, सदा बगिया में खिलकर।।
कह राधेगोपाल, नहीं बन इतनी भोली।
समझो ओ नादान, प्रेम की भाषा बोली।।

(72)

डोरी

डोरी बाँधू प्रीत की, मैं साजन के साथ।
साथ हमारा तो रहे, हरदम ही निस्वार्थ।।
हरदम ही निस्वार्थ, रहे बंधन का जाला।
ईश्वर ने तो यहाँ, सभी का संकट टाला।।
कह राधेगोपाल, अरे मैं सीधी गोरी।
साजन जी के साथ, प्रीत कि बाँधू डोरी।।

(73)

पाना

पाना जीवन में सदा, सबका ही तुम प्यार।
बच्चों को तो चाहिए, जीने का आधार।।
जीने का आधार, बनो आँखों का तारा।
करना अच्छे काम, बनो मत आसूँ खारा।।
कह राधेगोपाल, जिंदगी कम है माना।
सबका ही तुम प्यार, सदा जीवन में पाना।।

(74)

खोना

खोना मत तन को कभी, करके गंदे काम।
मात-पिता के नाम को, करना मत बदनाम।।
करना मत बदनाम, नशे से दूर ही रहना।
खुश रहना हर बार, दुखों को हर दम सहना।।
कह राधेगोपाल, कभी भी तुम मत रोना।
करके गंदे काम, अरे तन को मत खोना।।

(75)

यादें

यादें बिटिया की करे, माता को हलकान।
माता बनना जगत में, समझो मत आसान।।
समझो मत आसान ,करे वो सब पर छाया।
रखती उसका ध्यान, अरे जो गोदी आया।।
कह राधेगोपाल, करें बच्चों की बातें।
माता को हलकान, करें बिटिया की यादें।।

(76)

छोटी

छोटी छोटी बात को, देना मत तुम तूल।
रिश्ते रखने के लिए, कुछ बातों को भूल।।
कुछ बातों को भूल, सभी से विनती मेरी।
करने को तो माफ, कभी करना मत देरी।।
कह राधेगोपाल, करो मत बातें खोटी।
देना मत तुम तूल, कभी बातों को छोटी।।

(77)

मीठी

मीठी बातें बोल के, मन को लेना जीत।
कड़वी बातों से सदा, बुरा मानते मीत।।
बुरा मानते मीत, सोचकर हरदम बोलो।
मन में करो विचार, तभी तुम मुँह को खोलो।।
कह राधेगोपाल, करो मत बातें झूठी।
मन को लेना जीत, बोल कर बातें मीठी।।

(78)

बातें

बातें करना प्रेम की, दिलबर से दिन रात।
लेकिन अपनी बात से, मत देना आघात।।
मत देना आघात, गलत मत मुँह से बोलो।
बोलो जब भी बात, सदा मिश्री ही घोलो।।
कह राधेगोपाल, सुहानी होगी रातें।
दिलबर से दिन-रात, करो जब भी तुम बातें।।

(79)

चमका

चमका सूरज की तरह, मेरा प्यारा लाल।
आसमान का चंद्रमा, है भारत का भाल।।
है भारत का भाल, करें हम नित ही वंदन।
जैसे खुशबूदार, हमारे बाग का चंदन।।
कह राधेगोपाल, सदा ही वो है दमका।
मेरा प्यारा लाल, सदा सूरज बन चमका।।

(80)

गीता

गीता से हमको मिले, सदा धर्म का ज्ञान।
बिना पढ़े रहना नहीं, तुम खुद से अनजान।।
तुम खुद से अनजान, जिंदगी बहुत है छोटी।
करना युद्ध विराम, नहीं कर बातें खोटी।।
कह राधेगोपाल, जिंदगी वो ही जीता।
धर्म का लेना ज्ञान, सदा ही पढ़कर गीता।।

(81)

माना

माना जीवन में कठिन, आते हैं सब दौर।
फिर भी हँस करके बना, जग में अपना ठौर।।
जग में अपना ठौर, समझ के सबको अपना।
करके हरदम काम, देखते जाओ सपना।।
कह राधेगोपाल, यहाँ है खोना-पाना।
कठिन रहे हर दौर, सभी ने हरदम माना।।

(82)

कहना

कहना मेरा मान लो, करना सबसे प्यार।
हँसी-खुशी रहना यहाँ, जीवन के दिन चार।।
जीवन के दिन चार, रहो आपस में मिलकर।
जैसे रहता फूल, सदा काँटों में खिलकर।।
कह राधेगोपाल, जगत में जब तक रहना।
करना सबसे प्यार, यही है मेरा कहना।।

(83)

सहना

सहना पड़ता है सदा, अपना दुखड़ा आप।
औरों के दुख दर्द से, अपना दुख मत माप।।
अपना दुख मत माप, दुखी हैं सब संसारी।
सहने को तो दर्द, सदा करना तैयारी।।
कह राधेगोपाल, नदी में सुख की बहना।
अपना दुखड़ा आप, सदा पड़ता हैं सहना।।

(84)

वंदन

वंदन है माँ शारदे, तुम को बारंबार।
तुमसे ही चलती रहे, ज्ञान नदी की धार।।
ज्ञान नदी की धार, सदा हिम्मत दे देना।
छेड़ के वीणा तार, सभी दुख तुम हर लेना।।
कह राधेगोपाल, अरे तुम सुनना क्रंदन।
तुम को बारंबार, शारदे करते वंदन।।

(85)

आसन

आसन को करते समय, करना इतना काम।
पहले आसन को करो, फिर हो प्राणायाम।।
फिर हो प्राणायाम, दूर हो चिंता सारी।
भोग छोड़, कर योग, मिटेगी हर बीमारी।।
कह राधेगोपाल, करो श्वासों पर शासन।
करने पूजा-पाठ, लगाओ तुम तो आसन।।

(86)

आतुर

आतुर होना चाहिए, यदि करना हो काम।
अच्छा ही होता यहाँ, उसका भी परिणाम।।
उसका भी परिणाम, काम हिम्मत से लेना।
अपनी नहीं लगाम, सौंप औरों को देना।।
कह राधेगोपाल, जगत है कैसा चातुर।
करवाने को काम, यहाँ रहता है आतुर।।

(87)

चितवन

चितवन देखा श्याम का, रही गोपियाँ दंग।
राधा का भी चमक उठा, देखो सुंदर अंग।।
देखो सुंदर अंग, श्याम की बंसी बाजे।
राधा बैठी संग, मुकुट माथे पे साजे।।
कह राधेगोपाल, खिल उठा मन का उपवन।
सब रहते हैं देख, श्याम का सुंदर चितवन।।

(88)

आभा

चमकी आभा राम की, देख रहे हैं लोग।
लक्ष्मण जी की भी छवी, सभी रहे हैं भोग।।
सभी रहे हैं भोग, देखती है अब सीता।
तोड़े धनु श्रीराम, समय संकट का बीता।।
कह राधेगोपाल, छवी तो सब की दमकी।
चंदा जैसी आज, सभी की आभा चमकी।।

(89)

मोहक

मोहक मनभावन सरल, है वीणा की तान।
गायक की बनती सदा, इससे ही पहचान।।
इससे ही पहचान, मधुर सा लगता गाना।
गीत और संगीत, बनाते ताना-बाना।।
कह राधेगोपाल, खुशी का बनना दोहक।
होते सुर, लय, तान, जगत में सबसे मोहक।।

(90)

शीतल

शीतल वाणी से करो, राधे सबसे बात।
कटुक वचन मत बोल कर, पहुँचाना आघात।।
पहुँचाना आघात, सदा तुम मीठा बोलो।
करके आप विचार, अरे फिर मुँह को खोलो।।
कह राधेगोपाल, चमक जाता है पीतल।
क्रोध घृणा को छोड़, करो तुम मन को शीतल।।

(91)

हारा

हारा जो भी स्वयं से, कैसे जाए जीत।
हिम्मत देने के लिए, सदा बनाओ मीत।।
सदा बनाओ मीत, सभी हिल मिल के रहना।
गुमसुम हो मत बैठ, यही राधे का कहना।।
कह राधेगोपाल, उसे अब किसने तारा।
बिना किए ही काम, अरे जो हरदम हारा।।

(92)

जीता

जीता बच्चों के लिए, देता अपना नाम।
नमन पिता को कीजिए, दिन भर करता काम।।
दिन भर करता काम, पसीना बहुतबहाता।
श्रम करता दिन रात, नहीं आराम वो पाता।।
कह राधेगोपाल, अश्रु-विष है वह पीता।
रहता है चुपचाप, पिता तो ऐसे जीता।।

(93)

नारी

नारी को समझो नहीं, कभी आप कमजोर।
हिम्मत तो उसकी यहाँ, सदा मचाती शोर।।
सदा मचाती शोर, अरे वो खुश है रहती।
मन में रखती बात, नहीं वह जग से कहती।।
कह राधेगोपाल, समझ लो सब संसारी।
सबला बनती आज, नहीं अब अबला नारी।।

(94)

साहस

दिखलाती साहस सदा, नारी अब तो खास।
आँख भींच कर कीजिए, सब उस पर विश्वास।।
सब उस पर विश्वास, काम वो पक्का करती।
दिल को लेती जीत, नहीं वो आहैं भरती।।
कह राधेगोपाल, सभी को वो सिखलाती।
करके अच्छे काम, अरे वो है दिखलाती।।

(95)

नटखट

नटखट सी है राधिका, चंचल उसके नैन।
बिन अपने गोपाल के, हो जाती बेचैन।।
हो जाती बेचैन, दिया उसने सुख सुविधा।
हर कर सारी पीर, मिटाई है हर दुविधा।।
कह राधेगोपाल, अरे वो आए झटपट।
करती है जब याद, बुलाए राधा नटखट।।

(96)

अंकुश

अंकुश गति पर दो लगा, वाहन को दो मान।
सड़क नियम जब छोड़ते, आते तब व्यवधान।।
आते तब व्यवधान, चलो तुम हरदम दायाँ।
करो सड़क को पार, देखकर दायाँ बायाँ।।
कह राधेगोपाल, बनो मत कभी निरंकुश।
हेलमेट को रख माथ, रखो वाहन पे अंकुश।।

(97)

चंदन

चंदन माथे पर लगा, राखी बांधे हाथ।
जीवन भर रहता यहाँ, भाई-बहन का साथ।।
भाई-बहन का साथ, रहा है हरदम न्यारा।
भाई बन सरताज, बहिन को लगता प्यारा।।
कह राधेगोपाल, करें इस दिन को वंदन।
जब भाई के माथ, लगाती बहना चंदन।।

(98)

थोड़ा

थोड़ा श्रम भी कीजिए, जो करते आराम।
सुबह सवेरे भी करो, तुम थोड़ा व्यायाम।।
तुम थोड़ा व्यायाम, टहल लो थोड़ा छत पर।
छोड़ो सारे काम, चलो थोड़ा सा घर पर।।
कह राधेगोपाल, सैर से मुँह क्यों मोड़ा।
रहने को खुशहाल, टहल लो तुम भी थोड़ा।।

(99)

पूरा

पूरा करना है हमें, सौ कुंडलियाँ आज।
देते हैं विज्ञात जी, नित ही सबको काज।।
नित ही सबको काज, हमें लिखना सिखवाया।
बनकर के सरताज, अनीता को भिजवाया।।
कह राधेगोपाल, अरे मत छोड़ अधूरा।
करलो अपना काम, हमेशा तुम तो पूरा।।

(100)

सपना

सपना देखा था यहाँ, जिसने भी इस बार।
लिखते हरदम ही रहे, दो दो करके चार।।
दो दो करके चार, लिखें है सबने दोहे।
कुंडलियाँ के साथ, गीत भी मन को मोहे।।
कह राधेगोपाल, बना है घर यह अपना।
शतकवीर का ताज, मिलेगा अब है सपना।।

राधा तिवारी "राधेगोपाल"
खटीमा, उधम सिंह नगर, उत्तराखंड

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

नाम-	**राधा तिवारी 'राधेगोपाल'**
जन्म-	२७ सितम्बर, जोधपुर (राजस्थान)
पिताजी-	डॉ.भोला दत्त पांडेय
माताजी-	श्रीमती आनंदी पांडेय
पति-	श्री गोपाल दत्त तिवारी
बच्चे-	स्वाति (पुत्री), युगल (पुत्र)
पता -	मुकाम खटीमा, ब्लॉक- खटीमा, जिला- ऊधमसिंह नगर, (उत्तराखण्ड)
शिक्षा-	एम.ए.(अंग्रेजी), बी.एड.
कार्य-	शिक्षण (अंग्रेजी अध्यापिका) रा.उ.मा. विद्यालय सबौरा (खटीमा)
साहित्य सृजन-	दोहा, गजल, गीत, कविता, बाल कविता ,भजन ,मुक्तक , कुण्डलियाँ, हाइकु, चौपाइयाँ. घनाक्षरी, सवैया, लघुकथाएँ आदि।
विधा-	गद्य-पद्य
प्रकाशित पुस्तकें-	१. जीवन का भूगोल (दोहा संग्रह), २. सृजन कुंज (कविता संग्रह), ३. राधे की अंजुमन (गजल संग्रह), ४. लक्षिता (कुंडलियां)
साझा संग्रह-	१. जहाँ मिले धरती आकाश, २. ये दोहे बोलते हैं (दोहा संग्रह), ३. गुंजन (हाइकु संग्रह), ४. ये कुंडलियाँ बोलती है (कुंडलियां संग्रह), ५. गीत गूंजते से, ६. काव्यांगन
प्रकाशनाधीन-	सात पुस्तकें
सम्मान-	१४ सितंबर ६६ 'हिंदी पर विशेष योगदान सम्मान','युवा प्रतिभा सम्मान २०१७', 'नव सप्तक साहित्य सम्मान २०१७', 'साहित्य श्री २०१८', 'ब्लॉग श्री २०१८', 'साहित्य कुमुद सम्मान २०१६', Women Empowerment Award 2019, 'दोहा रत्न सम्मान', 'दोहा सृजक कलम सम्मान', 'दोहा विशारद', 'कलम काव्य गौरव सम्मान २०१६', 'दोहा रत्न', 'काव्य कलश', 'काव्य गौरव सम्मान', 'दोहा रत्न सम्मान', 'अल मँसूर सम्मान', 'श्रेष्ठ सृजन सम्मान', 'साहित्य सम्मान', 'शहीद भगतसिंह सम्मान २०२०', 'हौसलों की उड़ान २०२०', 'काव्य सौंदर्य सम्मान', ऑनलाइन कवि सम्मेलन 'सहभागिता सम्मान', 'साहित्य शिल्पी सम्मान', 'संचालन प्रमाण पत्र', 'साहित्य साधक सम्मान २०२०', 'अक्षय काव्य सहभागिता सम्मान', 'प्रतिभाग सम्मान पत्र','दोहा विशारद सम्मान', 'मातृ दिवस सम्मान', 'बहुविधा सृजन सम्मान',
सामाजिक-	दीन-दुखियों की सेवा में सदैव तत्पर।
उद्देश्य-	स्वान्तः सुखाय
सम्पर्क-	फोन नं.-9997771969, व्हाट्स एप नं. – 9997771969
e mail -	radhatiwari1968@gmail-com

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-223-4
मूल्य 90/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/